Dainik Bhaskar **Date – 02/09/2025**

कार्यक्रम • रिटायर्ड प्रोफेसर ने विद्यार्थियों को जीवन जीने की कला बारे दी जानकारी

'दबाव में किया काम सफलता की ओर नहीं ले जाता'

भास्कर न्यूज | जींद

सीआरएसयू में कंप्यूटर साइंस एवं एप्लीकेशन विभाग के इंडक्शन प्रोग्राम के बारहवें दिन कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के रिटायर्ड प्रोफेसर डीडी अरोड़ा ने विद्यार्थियों को जीवन जीने की कला के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि हमें जीवन में जो भी काम करना चाहिए स्वेच्छापूर्वक करना चाहिए, दबाव में किया गया काम कभी भी सफलता की ओर नहीं ले जाता।

उन्होंने कहा व्यक्ति के मन में उठ रहे विचार उसके जीवन की दिशा को निर्धारित करते हैं। जहां एक अच्छा विचार हमें उन्नति के उच्चतम शिखर तक पहुंचा सकता है वहीं एक गलत विचार हमें पतन की ओर ले जा सकता है। उन्होंने विद्यार्थी जीवन की सफलता के लिए मूल मंत्र देते हुए कहा कि विद्यार्थी को या तो विभाग में होना चाहिए या लाइब्रेरी में या अस्पताल में अर्थात विद्यार्थी को प्रतिदिन अपने विभाग में अपनी कक्षाओं में रहना चाहिए और यदि कक्षा ना हो तो उन्हें लाइब्रेरी में अपना समय व्यतीत करना चाहिए। विद्यार्थी को तभी छुट्टी करनी चाहिए यदि वह अस्पताल में हो अन्यथा उसका कर्मक्षेत्र विश्वविद्यालय का विभाग है, लाइब्रेरी है; उसे सदा वही रहना चाहिए। इसके बाद उन्होंने कहा कि हमें अपना मानसिक विकास करना चाहिए, जिसके लिए ज्ञान अति आवश्यक है। मानसिक रूप से विकसित व्यक्तियों को सभी पसंद करते हैं एवं आपके ज्ञान से ही आपका व्यवसाय बढ़ सकता है। अतः ज्यादा से ज्यादा ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

उन्होंने कहा कि हमें अपनी इच्छा शक्ति को मजबूत करना चाहिए। उन्होंने बताया कि माता-पिता एवं अध्यापकों का आदर किए बिना किसी भी प्रकार की भक्ति का कोई फल नहीं मिलता। इस मौके पर विभागाध्यक्ष डॉ. अनुपम भाटिया आदि मौजूद रहे।

जींद. सीआरएसयु में आयोजित कंप्यूटर साइंस एवं एप्लीकेशन विभाग के इंडक्शन प्रोग्राम में भाग लेते हुए।

पंजाब केसरी

Date – 02/09/2025

विद्यार्थियों को सिखाई जीवन जीने की कला

जींद, 1 सितम्बर (ललित) : चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय जींद में कंप्यूटर साइंस एवं एप्लीकेशन विभाग के इंडक्शन प्रोग्राम के 12वें दिन कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के रिटायर्ड प्रोफैसर डी.डी. अरोड़ा ने विद्यार्थियों को जीवन जीने की कला के बारे में बताया।

उन्होंने कहा कि हमें जीवन में जो भी काम करना चाहिए स्वेच्छापूर्वक करना चाहिए। दबाव में किया गया काम कभी भी सफलता की ओर नहीं ले जाता। उन्होंने कहा कि व्यक्ति के मन में उठ रहे विचार उसके जीवन की दिशा को निर्धारित करते हैं जहां एक अच्छा विचार हमें उन्नति के उच्चतम शिखर तक पहुंचा सकता है वहीं एक गलत विचार हमें पतन की ओर ले जा सकता है।

उन्होंने विद्यार्थी जीवन की सफलता के लिए एक मूल मंत्र देते हुए कहा कि विद्यार्थी को या तो विभाग में होना चाहिए या लाइब्रेरी में या अस्पताल में अर्थात विद्यार्थी को प्रतिदिन अपने विभाग में अपनी कक्षाओं में रहना चाहिए और यदि कक्षा न हो तो उन्हें लाइब्रेरी में अपना समय व्यतीत करना चाहिए। विद्यार्थी को तभी छुट्टी करनी चाहिए, यदि वह अस्पताल में हो अन्यथा उसका कर्मक्षेत्र विश्वविद्यालय का विभाग है, लाइब्रेरी है, उसे सदा वहीं रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमें अपना मानसिक विकास करना चाहिए, जिसके लिए ज्ञान अति आवश्यक है। मानसिक रूप से विकसित व्यक्तियों को सभी पसंद करते हैं एवं आपके ज्ञान से ही आपका व्यावसाय बढ़ सकता है। अत: ज्यादा से ज्यादा ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

कार्यक्रम को संबोधित करते डॉ. डी.डी. अरोड़ा।

उन्होंने कहा कि हमें अपनी इच्छा शक्ति को मजबूत करना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों को अपने माता-पिता एवं अध्यापकों का आदर करने का महत्व बताया। उन्होंने बताया कि माता-पिता एवं अध्यापकों का आदर किए बिना किसी भी प्रकार की भक्ति का कोई फल नहीं मिलता। भगवान भी उन्हीं से प्रसन्न होते हैं जो अपने माता-पिता एवं गुरुओं का आदर करते हैं। उन्होंने कहा कि कभी भी अपने माता-पिता, अध्यापक, चिकित्सक अथवा वकील से कोई बात नहीं छिपानी चाहिए तभी वह आपकी समस्या का हल कर पाएंगे। उन्होंने विद्यार्थियों को नेक नियति के साथ निरंतर प्रयास करने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि नेक नियति के साथ किए गए प्रयास ही सफलता का एकमात्र मूल मंत्र हैं।

विभागाध्यक्ष डॉ. अनुपम भाटिया ने विद्यार्थियों को डॉ. डी.डी. अरोड़ा द्वारा बताए गए मार्ग पर चलने को कहा। उन्होंने बताया कि डॉ. डी.डी. अरोड़ा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय रीजनल सेंटर जींद के प्रथम निदेशक थे एवं उन्हीं के मार्गदर्शन से उन्होंने अपने जीवन को सफल बनाया है। अत: विद्यार्थियों को भी चाहिए कि उनके बताए हुए मार्ग पर चलकर अपने जीवन को सफल बनाएं।

अमर उजाला
जोश! सच का!

Date – 02/09/2025

पढ़ाई दबाव से नहीं, स्वेच्छा से हो तो मिलती है सफलता

सीआरएसयू में इंडक्शन प्रोग्राम के दौरान कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के रिटायर्ड प्रोफेसर डीडी अरोड़ा विद्यार्थियों को जानकारी देते। स्रोत : सीआरएसयू

संवाद न्यूज एजेंसी

सीआरएसयू में विद्यार्थियों को बताई जीवन जीने की कला

जींद। सीआरएसयू में कंप्यूटर साइंस एवं एप्लीकेशन विभाग के इंडक्शन प्रोग्राम के 12वें दिन कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के रिटायर्ड प्रोफेसर डीडी अरोड़ा ने विद्यार्थियों को जीवन जीने की कला के बारे में बताया।

उन्होंने कहा कि हमें जीवन में जो भी काम करना चाहिए स्वेच्छापूर्वक करना चाहिए। दवाब में किया गया काम कभी भी सफलता की ओर नहीं ले जाता। उन्होंने कहा व्यक्ति के मन में उठ रहे विचार उसके जीवन की दिशा को निर्धारित करते हैं। जहां एक अच्छा विचार हमें उन्नति के उच्चतम शिखर तक पहुंचा सकता हैं।

वहीं एक गलत विचार हमें पतन की ओर ले जा सकता है। उन्होंने विद्यार्थी जीवन की सफलता के लिए एक मूल मंत्र देते हुए कहा कि विद्यार्थी को या तो विभाग में होना चाहिए या लाइब्रेरी में या अस्पताल में अर्थात विद्यार्थी को प्रतिदिन अपने विभाग में अपनी कक्षाओं में रहना चाहिए और यदि कक्षा न हो तो उन्हें लाइब्रेरी में अपना समय व्यतीत करना चाहिए।

उन्होंने विद्यार्थियों को नेक नियति के साथ निरंतर प्रयास करने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि नेक नियति के साथ किए गए प्रयास ही सफलता का एकमात्र मूल मंत्र है।

कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष डॉ. अनुपम भाटिया ने विद्यार्थियों को डॉ. डीडी अरोड़ा की ओर से बताए गए मार्ग पर चलने को कहा।

दैनिक जागरण

Date – 02/09/2025

दबाव में किया गया काम सफलता की ओर नहीं ले जाता : अरोड़ा

इंडक्शन प्रोग्राम में विद्यार्थियों को संबोधित करते प्रोफेसर डीडी अरोड़ा। ● सौ. विवि

जागरण संवाददाता ● जींद : चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय में कंप्यूटर साइंस एवं एप्लीकेशन विभाग के इंडक्शन प्रोग्राम के 12वें दिन कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के रिटायर्ड प्रोफेसर डीडी अरोड़ा ने विद्यार्थियों को जीवन जीने की कला के बारे में बताया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि हमें जीवन में जो भी काम करना है, वो स्वेच्छापूर्वक करना चाहिए। दबाव में किया गया काम कभी भी सफलता की ओर नहीं ले जाता। उन्होंने विद्यार्थी जीवन की सफलता के लिए एक मूल मंत्र देते हुए कहा कि विद्यार्थी को विभाग में होना चाहिए या लाइब्रेरी में या अस्पताल में, अर्थात विद्यार्थी को प्रतिदिन अपने विभाग में अपनी कक्षाओं में रहना चाहिए और यदि कक्षा ना हो तो उन्हें लाइब्रेरी में अपना समय व्यतीत करना चाहिए। विद्यार्थी को तभी छुट्टी करनी चाहिए, जब वह अस्पताल में हो, अन्यथा उसका कर्मक्षेत्र विश्वविद्यालय का विभाग है, लाइब्रेरी है, उसे सदा वही रहना चाहिए। विभागाध्यक्ष डा. अनुपम भाटिया ने कहा कि डा. डीडी अरोड़ा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय रीजनल सेंटर जींद के प्रथम निदेशक थे। उन्हीं के मार्गदर्शन से उन्होंने अपने जीवन को सफल बनाया है।